Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

21वीं सदी का भारत और गांधीवाद

डॉ. नीरज कुमार *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – महात्मा गांधी ने आजादी से पहले जिन समस्याओं पर विचार किया था और जो समाधान सुझाया था उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है और आगे भी बने रहने की पूरी संभावना है क्योंकि वे विशेषकर भारत के संबंध में गहरी समझ और नैतिकता पर आधारित रहे हैं। चाहे भारत के आर्थिक विकास और बढ़ती अमीरी के बीच संपत्ति के असंतुलित वितरण का सवाल हो या मशीनीकरण और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते प्रयोग से विशाल जनसंख्या के रोजगार का सवाल, अति उपभोक्तावाद की ओर बढ़ते कदम और पर्यावरण की समस्या, हिंसा का बढ़ता स्तर, विरोध के शांतिपूर्ण संसाधनों की आवश्यकता और विश्व गुरु बनने तथा वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ करने के लिए उनके विचार नये भारत में भी प्रासंगिक रहेंगे। महात्मा गांधी के शिष्यों ने संविधान और सरकारी योजनाओं में उनके विचारों को अपेक्षा से बहुत कम स्थान दिया। वर्तमान केन्द्र सरकार जो महात्मा गांधी के विचारों का समर्थक नहीं रही है वह अपनी कई स्कीमों और योजनाओं में महात्मा गांधी के विचारों का समर्थन करते दिखाई देती है।
शब्द कुंजी – उपभोक्तावाद, जनसंख्या, रोजगार, अहिंसा, असमानता।

प्रस्तावना – सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारतवर्ष अंग्रेजी शासन के अधीन आकर पंगु हो गया था। इस देश के संसाधनों को ब्रिटेन के लिए लुटा खसोटा गया। जहां तक संभव हुआ भारत और उसके लोगों को चुसा गया, इसके धन–संपत्ति को सोख लिया गया। जब भारत आजाद हुआ उस समय यहां औद्योगिक विकास लगभग नग्न्य था। 1947 में भारत की साक्षरता 18 प्रतिशत थी। गरीबी का साम्राज्य था। तकनीक, आधारभूत ढ़ांचा और अर्थव्यवस्था का नये सिरे से निर्माण करना था। 15 अगस्त 1947 को संविधानसभा में दिए प्रसिद्ध भाषण ट्रिस्ट विद डेस्टिनी में भारत के अंतरिम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल ने कहा था, 'मध्यरात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोष में सो रही है, हिन्दुस्तान एक नई जिंदगी और आजादी के वातारण में अपनी आंख खोल रहा है।'[1]

उदारवादी प्रतिनिधि लोकतंत्र की खर्चीली शासन प्रणाली को सफलतापूर्वक अपनाकर और भारतीय लोकतंत्र की समाप्ति एवं तानाशाही शासन की स्थापना की समस्त नकारात्मक भविष्यवाणियों को धता बताकर दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना हुआ है जिसपर हर भारतीय को गर्व है इसलिए भी कि भारत में दुनिया के प्राचीनतम लोकतंत्र विद्यमान रहे थे। आजादी के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से प्राथमिकताओं के अनुसार भारत प्रगति करता रहा भले गति अपेक्षाकृत धीमी रही। भारत आर्थिक सुधार और उदारीकरण 1991 में किया। इसके साथ ही अपनी अर्थव्यवस्था को दुनियाभर के निवेशकों, वस्तुओं और सेवाओं के लिए खोला तो कुछ धीमी चाल के बाद रफ्तार पकड़ ली है। कोरोना काल में अर्थव्यवस्था में संकुचन के बाद भरपाई करते हुए भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 13.5 प्रतिशत की छलांग लगाई थी। सामान्य परिस्थितियों में अधिकतम विकास दर 2010 में 8.5 प्रतिशत दर्ज की गई थी।[2] साल 2014 से 2023 के बीच भारत के जीडीपी में कुल 83 फीसद की बढ़त दर्ज की गई है। नौ सालों की वृद्धि दर के मामले में भारत चीन से सिर्फ एक फीसदी नीचे रहा है क्योंकि चीन की जीडीपी में 84 फीसद की बढ़त दर्ज की गई है।[3] इसी दौरान भारत ब्रिटेन, फांस, कनाडा, इटली और ब्राजील की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। लाइव मिंट के मुताबित, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी पिछले साल अक्टूबर में अनुमान लगाया है कि भारत साल 2027–28 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। आईएमएफ के साथ ही वैश्विक वित्तीय फर्म मॉर्गन स्टैनली ने भी पिछले साल अनुमान लगाया है कि 2027 तक भारत अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।[4] अगर भारतीय जीडीपी मौजूदा औसत छह–सात फीसद की दर से भी आगे बढ़ती रहती है तो भी वह साल 2027 तक जर्मनी और जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी, क्योंकि इन देशों के लिए छह–सात प्रतिशत बढ़ोतरी तकरीबन असंभव ही है, क्योंकि जर्मनी और जापान की विकास दर क्रमश: ढाई और डेढ़ प्रतिशत ही है।[5]

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विजुअल कैपिटलिस्ट के अक्टूबर 2022 के जीडीपी के आंकड़ों के हिसाब से दुनिया के दस अमीर देशों की सूची इस तरह बनेगी :–

10. इटली, 1.99 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
9. रूस, 2.113 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
8. कनाडा, 2.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
7. फ्रांस, 2.778 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
6. ब्रिटेन, 3.199 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
5. भारत, 3.469 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
4. जर्मनी, 4.031 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
3. जापान, 4.301 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर
2. चीन, 18.321 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर

1. अमेरिका, 25.035 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर[6]

1990 में चीनी अर्थव्यवस्था भारत की तुलना में थोड़ी ही बड़ी थी, लेकिन आज चीन की जीडीपी भारत से 5.46 गुणा बड़ी है।[7] चीन ने 1978 में और भारत ने 1991 में अपने यहां आर्थिक सुधार शुरू किए। प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का महत्वकांक्षी लक्ष्य रखा है।[8] आज भारत दुनिया के कुल जीडीपी के चार फीसद का हिस्सेदार है। 2047 तक भारत की अर्थव्यवस्था 20 लाख करोड़ डॉलर की हो जाएगी।[9] अमेरिकी विनिवेश बैंक गोल्डमैन सैक्स ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा है कि भारत 2075 तक न केवल जापान और जर्मनी बल्कि अमेरिका को भी पीछे छोड़ते हुए दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। वर्तमान में, भारत जर्मनी, जापान, चीन और अमेरिका के बाद दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। निवेश बैंक ने लिखा है कि नवाचार, प्रौद्योगिकी, उच्च पूंजी निवेश और बढ़ती श्रमिक उत्पादकता आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था की मदद करेगी।[10] अर्थशास्त्र में 2001 के नोबल पुरस्कार विजेता माइकल स्पेंस का मानना है कि भारत का वक्त आ चुका है। प्रोफेसर माइकल स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में डीन हैं, उन्होंने बीबीसी से कहा, 'भारत जल्द ही चीन की बराबरी कर लेगा। चीनी अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ेगी लेकिन भारत की नहीं।'[11]

भारत या किसी भी देश को किसी भी क्षेत्र में प्रगति करने के लिए अपने संसाधनों का समुचित प्रयोग करते हुए आर्थिक प्रगति आवश्यक है। सौभाग्य से नये भारत में आर्थिक विकास तेजी से हो रहा है। भारत उभर रहा है। आज भारत न केवल अर्थिक क्षेत्र में प्रगति कर रहा है बल्कि सामरिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता और प्रगति की ओर अग्रसर है। ग्लोबल फायरपावर की वेबसाइट के अनुसार अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चौथी सबसे बड़ी सैन्य ताकत है। चन्द्रयान, मंगलयान, शुक्रयान की इसरो की परियोजनाओं के माध्यम से भारत अंतरिक्ष विज्ञान और व्यावसाय में स्थान बना रहा है। जेनरिक दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। कोविड 19 संकट में भारत ने वैक्सीन उपलब्ध कराकर दुनिया में संकट के समय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्लोबल साउथ के देशों में भारत की छवी अच्छी बनी है। भारत के तकनीकी, शैक्षणिक और आर्थिक विकास से ये देश प्रेरणा ले रहे हैं। भारत इन देशों का नेता बनकर उभरा है। भारत को पश्चिमी देशों में भी महत्व दिया जा रहा है।

भारत में मध्यम वर्ग की बड़ी आबादी को उपभोक्ता के रूप में देखा जा रहा है। जिसपर दुनिया भर के बहुराष्ट्रीय कंपनियों और औद्योगिक देशों की नजर है। बड़ी संख्या में कामगार वर्ग की उपलब्धता, अंग्रेजी जानने वाले तकनीशियनों आदि के कारण भारत दुनिया का बैक ऑफिस बना हुआ है और मैनुफैक्चरिंग के क्षेत्र में प्रगति की ओर अग्रसर है। इंटरनेट के क्षेत्र में भी भारत आगे की ओर है। भारत का साक्टवेयर के क्षेत्र में अग्रणी स्थान है।

इस प्रगतिशील नये भारत में राष्ट्रपिता, महान विचारक, नेता और कर्मयोगी महात्मा गांधी की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान महान भारत के सपने देखे थे। भारत की कई चुनौतियों और समस्याओं पर विचार किया था। उन समस्याओं से नया भारत भी जुझ रहा है। एक सशक्त, उन्नत, खुशहाल और महान राष्ट्र बनना है तो भारत को उन चुनौतियों से पार पाना होगा।

प्रख्यात अमेरिकी अर्थशास्त्री स्टीव हैंके जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में एप्लाइड इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर हैं, जिन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन की आर्थिक सलाहकार परिषद में भी काम किया है। बीबीसी हिंदी से बात करते हुए वो कहते हैं,'भारत समस्याओं से दबा हुआ है। इंग्लैंड में भारतीय मूल के राणा मित्तर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में आधुनिक चीन के इतिहास और राजनीति के प्रोफेसर हैं और चीन पर उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। उन्होंने बीबीसी हिंदी को एक ईमेल इंटरव्यू में बताया कि भारत को अपने युवाओं को अधिक कुशल बनाने और शिक्षा पर अधिक खर्च करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा,'भारत की जनसंख्या युवा है, लेकिन चीन अभी भी शोध और विकास पर अधिक खर्च करता है, इसलिए भारत को अपनी जनसंख्यिकी से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए शिक्षा पर अधिक निवेश करना होगा।'[12]

आर्थिक असमानता का व्यापक दायरा है। जिससे देश की एक बड़ी आबादी बहुत की कम आय पर विपरीत परिस्थितियों में जीवन यापन कर रही है। भारत तीसरी अर्थव्यवस्था भी बन जाएगी तो भी इसमें ज्यादा सुधार होने की संभावना नहीं है। आलोक पुराणिक मानते हैं, 'जहां एक ओर भारत दुनिया की तीसरी शीर्ष अर्थव्यवस्था बनने की ओर कदम बढ़ा रहा है। वहीं, इससे आर्थिक गतिविधियों में बढोतरी होगी जिसका लोगों को फायदा मिलेगा। लेकिन इससे आम लोगों की जिंदगी और उनकी आर्थिक समृद्धि में नाटकीय बदलाव होने की संभावना कम है।'[13] 2023 में ऑक्सफैम ने वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की वार्षिक बैठक के दौरान अपनी वार्षिक असमानता रिपोर्ट 'सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट : द इंडिया स्टोरी' में बताया है कि भारत के सबसे अमीर 1 प्रतिशत लोगों के पास देश की कुल संपत्ति का 40 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा है। देश की आधी यानी 50 प्रतिशत आबादी के पास इंडिया की कुल संपत्ति का सिर्फ 3 प्रतिशत है। इसके अनुसार भारत में अरबपतियों की कुल संख्या 2020 के 102 से बढ़कर 2022 में 166 हो गई है। भारत के 100 सबसे अमीर लोगों की संयुक्त संपत्ति 660 अरब डॉलर (54.12 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंच गई है। यह एक ऐसी राषि है जो 18 महिने से ज्यादा के पूरे केन्द्रीय बजट को फंड दे सकती है।[14]

जब यह देश 1950 में लोकतांत्रिक घोषित हुआ तो देश में प्रजातांत्रिक समाजवाद स्थापित करने की घोषणा की गई थी। क्या कारण है कि यह लक्ष्य आज भी ध्रुवतारे की तरह कहीं दूर ठिठका हुआ लगता है। अरबपति खरबपति हो गए हैं और निर्धन और निर्धन हो हाने की राह पर चल दिए।[15]

प्रति व्यक्ति की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की स्थिति अभी भी बहुत खराब है। भारत में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 2.6 हजार अमेरिकी डॉलर है तो अमेरिका में ये आंकड़ा 80 हजार डॉलर से ज्यादा है।16 भारत में प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय 2.6 हजार डॉलर है लेकिन इसमें अरबपतियों की आय भी सम्मिलित है। यहां एक ओर दुनिया के सबसे सुविधाभोगी लोग हैं तो दूसरी ओर घोर अभाव में कठिनतम स्थिति में किसी तरह जीवन यापन करते लोग भी हैं।

महात्मा गांधी उद्योगवाद को विशेषकर भारत के लिए पसंद नहीं करते थे जिसकी ओर भारत बढ़ रहा है तथा इसमें अभी बहुत प्रयास करके उंचाईयां छूने के लिए दृढ़ संकल्पित है। नये भारत में महात्मा गांधी के इस बात को स्वीकार करते हुए उद्योगवाद से दूर जा पाना मुश्किल है यही आज की वास्तविकता है। औद्योगिक उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर मशीनों का प्रयोग होता है। महात्मा गांधी हर तरह के मशीन के खिलाफ नहीं थे। उन्होंने कहा था कि व्यक्ति के परिश्रम की बचत मशीन का लक्ष्य होना चाहिए और प्रामाणिक मानव-कल्याण का विचार, न कि लोभ, उसका हेतु होना चाहिए।

लोभ के स्थान पर प्रेम को बिठा दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा। व्यक्ति के परिश्रम की बचत मशीन का लक्ष्य होना चाहिए और प्रामाणिक मानव-कल्याण का विचार, न कि लोभ, उसका हेतु होना चाहिए। लोभ के स्थान पर प्रेम को बिठा दीजिए, फिर सब ठीक हो जायगा। 17 वे सिंगर की सिलाई की मशीन का स्वागत करते हैं। वे कहते हैं कि मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं है, बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है, उसके लिए है। 18 वे आगे कहते है कि उनसे मेहनत जरूर बचती है, लेकिन लाखों लोग बेकार होकर भूखों मरते हुए रास्तों पर भटकते हैं। समय और श्रम की बचत तो मैं भी चाहता हूं, परंतु वह किसी खास वर्ग की नहीं, बल्कि सारी मानव-जाति की होनी चाहिए। कुछ गिने-गिनाये लोगों के पास संपत्ति जमा हो ऐसा नहीं, बल्कि सबके पास जमा हो ऐसा मैं चाहता हूं। आज तो करोड़ों की गरदन पर कुछ लोगों के सवार हो जाने में यंत्र मददगार हो रहे हैं।[19] उनका कहना था कि सबसे पहले वैज्ञानिक सत्यों और आविष्कारों को निरे लोभ के साधन नहीं रहना चाहिये।[20]

महात्मा गांधी भले ग्रामीण और श्रम प्रधान अर्थव्यवस्था के पक्षधर रहे हैं लेकिन नया भारत उद्योगवादी, शहरी और बाजार अर्थव्यवस्था की ओर ही बढ़ रहा है। महात्मा गांधी के विचार इसके माध्यम से फैल रही आर्थिक असमानता को कम करने और सर्व कल्याण के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप जो असमानता और शोषण की परिस्थितियां उत्पन्न होती है उससे निपटने के लिए साम्यवादी क्रांति के विकल्प के रूप में गरीबों-वंचितों के लिए और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए महात्मा गांधी के विचार महत्व रखते हैं। पूंजीपतियों में जो स्वार्थपरता है उससे उन्हें उपर उठाना चाहते हैं और उनको सबके कल्याण के लिए कार्य करने वाले योग्य साधन के रूप में बदल देना चाहते हैं। उद्योगपतियों को संपत्ति का न्यासी बना देना चाहते हैं।

वे मानते थे कि यदि वे उपकार की भावना रखकर अपनी बुद्धि का उपयोग करें तो राज्य का ही काम करेंगे। ऐसे लोग संरक्षक बनकर रहते है, और किसी भी रूप में नहीं। मैं बुद्धिशाली आदमी को अधिक कमाने दूंगा, उसकी बुद्धि को कुंठित नहीं करूंगा। परंतु उसकी अधिकांश कमाई राज्य की भलाई के लिए वैसे ही काम आनी चाहिए, जैसे कि बाप कि सारे कमाऊ बेटों की आमदनी परिवार के कोष में जमा होती है। वे अपनी कमाई के संरक्षक बनकर ही रहेंगे।[21] महात्मा गांधी कहते हैं, यदि समाज का हरएक सदस्य अपनी शक्तियों का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिए नहीं बल्कि सबके कल्याण के लिए करे, तो क्या इससे समाज की सुख-समृद्धि में वृद्धि नहीं होगी? हम ऐसी जड़ समानता का निर्माण नहीं करना चाहते, जिसमें कोई आदमी अपनी योग्यताओं का पूरा-पूरा उपयोग कर ही न सके। ऐसा समाज अन्त में नष्ट हुए बिना नहीं कर सकता। इसलिए मेरी यह सलाह बिलकुल सही है कि धनवान लोग चाहे करोड़ों रुपये कमायें (बेशक ईमानदारी से ही), लेकिन उनका उद्देश्य सारा पैसा सबके कल्याण में समर्पित कर देने का होना चाहिए।[22]

यही निहितार्थ लिए हुए जॉन रॉल्स अपने प्रक्रियात्मक न्याय सिद्धांत में बताते है कि समाज के योग्य और संपत्तिशाली लोगों की कमाई में समाज के सबसे कमजोर को अवसर की समानता को बढ़ाने के लिए लाभ मिलना चाहिए। वे समाज को एक जंजीर की तरह देखते हैं और कहते है कि यह समाज उतना ही मजबूत माना जाएगा जितना की उस जंजीर की सबसे कमजोर कड़ी। इसलिए समाज को मजबूत बनाने के लिए ऐसी कमजोर कड़ी को खोजकर सबसे पहले मजबूत किया जाना चाहिए।

ऐसे ही विचार 2023 में ऑक्सफैम ने वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की वार्षिक बैठक के दौरान अपनी वार्षिक असमनता रिपोर्ट 'सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट : द इंडिया स्टोरी' में व्यक्त किये गये हैं कि भारत के 10 सबसे अमीरों पर 5 प्रतिशत टैक्स लगाने से 1.37 लाख करोड़ रुपए जुटाए जा सकते हैं। यह 2020-2023 के लिए हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर मिनिस्ट्री (86,200 करोड़ रुपए) और आयुष मंत्रालय (3050 करोड़ रुपए) के अनुमानित फंड्स से 1.5 गुना ज्यादा है। इतने पैसों से देश के सभी बच्चों को स्कूल भेजने के लिए पूरा पैसा मिल सकता है। ऑक्सफैम ने कहा, 'अगर भारत के बिलियनेयर्स पर उनकी टोटल वेल्थ पर 2 प्रतिशत की दर से एक बार टैक्स लगाया जाए, तो इससे देश में अगले तीन साल तक कुपोषित लोगों के पोषण के लिए 40,423 करोड़ रुपए की जरूरत को पूरा किया जा सकता है।'[23]

संपत्ति का व्यापक असमान वितरण न केवल सामाजिक भेदभाव उत्पन्न करता है बल्कि सत्ता पर संपत्तिशाली का अनुचित प्रभाव भी स्थापित कर देता है। इस बुराई से भी महात्मा गांधी वाकिफ थे। आज भारत में ऐसा होता हुआ दिखाई देता है। सत्ता पर भारत के उद्योगपतियों के प्रभाव के आरोप विपक्ष द्वारा लगाए जाते रहे हैं। लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मीडिया को माना जाता है। भारत की अधिकांश मीडिया संस्थान पूंजीपतियों के स्वामित्व में हैं। महात्मा गांधी का विचार था कि जब तक मुठीभर धनवानों और करोड़ों भूखे रहने वालों के बीच भारी अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलने वाली राज-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती।[24] उन्होंने यहां तक कहा था कि अगर धनवान लोग अपने धन को और उसके कारण मिलने वाली सत्ता को खुद राजी-खुशी से छोड़कर और सबके कल्याण के लिए सबके साथ मिलकर बरतने को तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देश में हिंसक और खूंख्वार क्रांति हुए बिना न रहेगी।[25]

महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत के लिए सपना देखा था कि आजाद हिन्दुस्तान में देश के बड़े से बड़े धनवानों के हाथ में हुकूमत का जितना हिस्सा रहेगा, उतना ही गरीबों के हाथ में भी होगा; और तब नई दिल्ली के महलों और उनकी बगल में बसी हुई गरीब मजदूर बस्तियों के टूटे-फूटे झोंपड़ों के बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह एक दिन को भी नहीं टिकेगा।[26]

क्या नये भारत में भी गरीबों पिछड़ों की हितों की रक्षा के लिए महात्मा गांधी के उपर्यूक्त विचार की प्रासंगिकता नहीं रहेगी? अवश्य रहेगी। भारतीय संविधान के भाग 4 में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व में अनुच्छेद 39 के खंड (ख) और (ग) में राज्य द्वारा अनुकरणीय नीति तत्व में कहा गया है कि (ख) समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बंटा हो जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो; और (ग) आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले जिससे धन और उत्पादन साधनों का सर्वसाधारण के लिए अहितकारी संकेंद्रण न हो।[27] इस लक्ष्य को प्राप्त करना सरकारों का दायित्त्व है। जिसे प्राप्त करने में महात्मा गांधी के विचार सहायता करते हैं।

महात्मा गांधी कहते हैं, 'भारत में लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें दिन में केवल एक ही बार खाकर संतोष कर लेना पड़ता है; और उनके उस भोजन में भी सूखी रोटी और चुटकीभर नमक के सिवा और कुछ नहीं होता। हमारे पास जो कुछ भी है उस पर हमारा और आपका तब तक कोई अधिकार नहीं है जब

तक इन लोगों के पास पहनने के लिए पूरा कपड़ा और खाने के लिए पूरा अन्न नहीं हो जाता।'[28] नये भारत में स्थिति ऐसी नहीं है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली और खाद्य सुरक्षा के माध्यम से इससे पार पाया जा सका है। समृद्धि का विस्तार हो रहा है। लेकिन महात्मा गांधी ने आर्थिक समानता के लिए कार्य करने का अर्थ बताया था कि एक ओर से जिन मुटठीभर पैसे वाले लोगों के हाथ में राष्ट्र की संपत्ति का बड़ा भाग इकटठा हो गया है, उनकी संपत्ति को कम करना; और दूसरी ओर से जो करोड़ों लोग अधपेट खाते और नंगे रहते हैं, उनकी संपत्ति में वृद्धि करना।[29] आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

भारत 2023 में चीन को पीछे छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है। भारत के पास विश्व भूमि का 2.4 फीसदी है लेकिन यहां विश्व की 18 फीसदी आबादी बसती है। भारत के लिए इतनी आबादी को सुविधाएं उपलब्ध कराना एक चुनौती है तो अवसर भी है। भारत के पास युवा आबादी की बड़ी संख्या है। ऐसा किसी अन्य देश के पास नहीं है। इन्हें कुशल बनाकर अवसर के रूप में बदला जा सकता है।

ब्लूमबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के हवाले से बताया कि भारत की जनसंख्या 1.428 142.86 करोड़ से अधिक है। जबकि, चीन की आबादी 1.425 अरब 142.57 करोड़ है।[30] यूएनएफपीए की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 68 प्रतिशत 15 से 64 वर्ष आयु वर्ग में हैं। इसके अलावा 7 प्रतिशत 65 से ऊपर के आयु वर्ग में हैं। विभिन्न एजेंसियों के अनुमान से पता चला है कि भारत की जनसंख्या लगभग तीन दशकों तक बढ़ती रहने वाली है।[31] भारत चाहता है कि युवा शक्ति का लाभ उठाकर अर्थव्यवस्था को उंचाई पर ले जाया जाये। माना जाता रहा है कि उदारीकरण और वैश्वीकरण अवसरों को बढ़ाते हैं और रोजगार में वृद्धि करते हैं लेकिन भारतीय रिजर्व बैंक के एक अध्ययन पर आधारित यह विश्लेषण काबिल-ए-गौर है कि 1999-2000 में अगर जीडीपी 1 प्रतिशत बढ़ती थी तो रोजगार में 0.39 प्रतिशत का इजाफा होता था। 2014-15 तक आते-आते स्थिति यह हो गयी कि 1 प्रतिशत जीडीपी बढ़ने से सिर्फ 0.15 प्रतिशत रोजगार बढ़ता है। मतलब जीडीपी बढ़ने, पूंजीपतियों का मुनाफा बढ़ने से अब लोगों को रोजगार नहीं मिलता। इसलिए जब कॉरपोरेट मीडिया अर्थव्यवस्था में तेजी-खुशहाली बताए तो भी उससे आम लोगों को खुश होने की कोई वजह नहीं बनती।32 आज चांद पर जाने की जितनी चिंता है, धरती पर रोजगार को लेकर नहीं। गांधी विज्ञान के विरोधी न थे, लेकिन उन्हें 'इकोनॉमी' को लेकर ज्यादा चिंता थी। वे देश के बेरोजगारों को लेकर चिंतित थे, जो 21वीं सदी में बड़े पैमाने पर बढ़ रहे हैं। वस्तुत: आज सिर्फ आर्थिक वृद्धि देखी जाती है, रोजगार घट रहे हैं कि बढ़ रहे हैं, इससे मतलब नहीं होता।[33]

हालांकि वर्तमान में फिर से दुनियाभर में अर्थव्यवस्था के खूलेपन के स्थान पर संरक्षतावाद दिखाई देने लगा है। आत्मनिर्भरता की बात भी की जाने लगी है। भारत के प्रधानमंत्री भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आत्मनिर्भरता की नीति पर चल रहे हैं। यह महात्मा गांधी के स्वदेशी की भावना को ही अभिव्यक्त करता है। महात्मा गांधी के अनुसार, 'स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना, जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है।' अर्थ के क्षेत्र में मुझे अपने पड़ोसियों द्वारा बनायी गयी वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए और उन उद्योगों की कमियाँ दूर करके, उन्हें ज्यादा सम्पूर्ण और सक्षम बनाकर उनकी सेवा करना चाहिए।'[34] महात्मा गांधी का मानना था कि आर्थिक और औद्योगिक जीवन में हमने स्वदेशी के नियम को भंग किया है। इसीलिए जनता की अधिकांश गरीबी का कारण विदेशों पर निर्भरता है।[35]

महात्मा गांधी की सबसे बड़ी चिंता भारत की विशाल आबादी को काम उपलब्ध कराने की थी मशीनीकरण और उद्योगवाद का विरोध संपत्ति के संकेन्द्रण के साथ-साथ बेरोजगारी बढ़ने की चिन्ता भी थी। नया भारत में मशीनीकरण और औद्योगिकरण जोर शोर से हो रहा है। बेरोगारी दर बढ़ रही है। ऐसे में पकौड़े तलने जैसे रोजगार भी सुझाए जा रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए स्व-रोजगार, कुटीर उद्योग को सरकार द्वारा मुद्रा योजना और कई योजनाओं के माध्यम से महात्मा गांधी के विचारों पर चलने का प्रयास हो रहा है। महात्मा गांधी का कहना था कि देश के हर नागरिक को पूरा काम देने वाली अर्थव्यवस्था खड़ी करने के लिए हमें उद्योगवाद का, केन्द्रित उद्योग-धंधों का और अनावश्यक यंत्रों का त्याग करना होगा।[36] भारत सरकार ने स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और इसके साथ लघु और कुटीर उद्योगों के विकास पर भी पूरा ध्यान देना शुरू कर दिया है। कोशिश यह है कि भारत अब आयात आधारित अर्थव्यवस्था से निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बने।[37] महात्मा गांधी को डर था कि भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश के लिए बेरोजगारी की समस्या को मशीन से बढ़ावा मिल सकता है। उन्हें यह भी डर था कि ऐसे यंत्र नहीं होने चाहिए जो काम न करने के कारण आदमी के अंगों को जड़ और बेकार बना दें।[38] उन्होंने कहा है कि यंत्रों से काम लेना उसी अवस्था में अच्छा होता है, जब कि किसी निर्धारित काम को पूरा करने के लिए आदमी बहुत ही कम हों या नपे-तुले हों। पर यह बात हिन्दुस्तान में तो है नहीं। यहां काम के लिए जितने आदमी चाहिए, उनसे कहीं अधिक बेकार पड़े हुए हैं।[39]

निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बनाने के साथ ही साथ घरेलू उपभोक्ताओं के मांग में भी वृद्धि के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास हो और लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठे। वर्तमान समय में उच्च जीवन स्तर मापने का तरीका उच्च उपभोग का स्तर है। ऐसे अर्थशास्त्र से उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिलता है। उपभोक्तावाद जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण का कारण है। ऐसे में अनियंत्रित उपभोग को बढ़ावा देने के स्थान पर नियंत्रित रूप में अभावों में जीवन यापन कर रहे लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की जरूरत है। यदि जीवन स्तर के मामले में लोगों का आदर्श अमेरिका की जीवन शैली होगी तो पर्यावरण का विनाश और बढ़ जाएगा। एक आकलन के अनुसार अमेरिका की जनसंख्या तो विश्व की कुल जनसंख्या की मात्र 4.42 प्रतिशत है लेकिन वह विश्व के संसाधनो का करीब 28.97 प्रतिशत का उपभोग करती है।[40] वैश्विक आबादी को भौतिक संसाधन मुहैया कराने और सम्पन्नता के इस सार्वभौम जीवन-स्तर तक उठाने के लिए एक नहीं बल्कि अनेक ग्रहों की जरूरत पड़ेगी।[41]

महात्मा गांधी के जीवन काल में पर्यावरण प्रदूषण बड़ा मसला नहीं था फिर भी उनके विचार भविष्य की समस्याओं के लिए भी प्रासंगिक रहे हैं। जैसा कि उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्धरण कि 'पृथ्वी पर सभी की जरूरतों के लिए काफी संसाधन उपलब्ध हैं लेकिन सभी के लालच के लिए जगह नहीं है,'[42] उनके विचार उपभोग को संतुलित बनाने में हमारी सहायता करती है। महात्मा गांधी ने भारत के लोगों की जीवन शैली के मान्य सिद्धांत सादा जीवन उच्च विचार को अपनाने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा था कि

यदि सादा जीवन जीने योग्य है तो यह प्रयत्न भी करने योग्य है, चाहे वह प्रयत्न किसी एक ही व्यक्ति या किसी एक ही समुदाय द्वारा क्यों न किया जाये।[43] इस तरह आज मानव जीवन पर सबसे बड़े संकट के रूप में प्रकट पर्यावरण संकट की समस्या के प्रति महात्मा गांधी के विचार संवेदनशील बनाता है जिसकी नये भारत में इसकी ज्यादा जरूरत पड़ती रहेगी।

नये भारत में हिंसा पर नियंत्रण भी पाना होगा। मणिपुर में कुकी और मैतेई विवाद से उत्पन्न हिंसा हो या नूह (मेवात) की हिंसा या नक्सली हिंसा, जम्मू और कश्मीर तथा देश के अन्य स्थानों पर नागरिकों द्वारा की गई हिंसा देश को परेशानी में डालता है और जान-माल का नुकसान करता है। जबकि शांतिपूर्ण साधनों से विरोध दर्ज किया जा सकता है या अपनी मांगे मनवाई जा सकती है। नये भारत में ऐसे हिंसा का कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। अहिंसा के पूजारी के रूप में प्रसिद्ध महात्मा गांधी यहां महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। जहां अहिंसक साधनों का प्रयोग किया भी जाता है तो भी उसमें बहुत सी खामियां होती है वहां भी महात्मा गांधी के विचार सहायता कर सकते है। उनका सत्याग्रह का अस्त्र हमें सहायता प्रदान कर सकता है। महात्मा गांधी साध्य और साधन की एकता में विश्वास करते थे। अहिंसा को सत्य तक पहुंचने का साधन मानते हैं। उनका विचार था कि गलत साधन से सही साध्य तक नहीं पहुंचा जा सकता। इसलिए विरोध जताने के एक समुचित अहिंसात्मक साधन के रूप में सत्याग्रह का आविष्कार किया। वे सत्याग्रह के संबंध में बताते थे कि सत्याग्रही का अन्यायी को परेशान करने का इरादा कभी नहीं होता। वह उसे डराना भी नहीं चाहता; हमेशा उसके हृदय से अपील करता है। यही होना भी चाहिये। सत्याग्रही का उद्देश्य अन्याय करने वाले को दबाना नहीं, बल्कि उसका हृदय-परिवर्तन करना होता है।[44] महात्मा गांधी कहते थे कि अगर हम खुद को अपने शत्रु की स्थिति में रखकर उसके दृष्टिकोण को समझें, तो संसार के तीन-चौथाई दु:ख-दर्द और गलतफहमियां मिट जायें। तब या तो हम अपने शत्रु के साथ जल्दी सहमत हो जायेंगे या उसके बारे में उदारतापूर्वक विचार करेंगे।[45] वे मानते हैं कि सत्याग्रह में जबरदस्ती का लवलेश भी नहीं होना चाहिये। हमें अधीर नहीं बनना चाहिये; और हम जिन साधनों को अपना रहे हैं, उनमें हमारी अटल श्रद्धा होनी चाहिये।[46]

भारत अतीत का अपना समुचित स्थान पाना चाहता है। भारत की भूमि अध्यात्म की भूमि रही है। भारत ने दुनिया को योग दिया है, अहिंसा, सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और वसुधैव कुटुंबकम के विचार दिये हैं। महात्मा गांधी इन सबमें विश्वास रखते थे। सर्वधर्म समभाव के संबंध में उनका कहना था कि सब धर्म एक ही स्थान पर पहुंचने के अलग-अलग रास्ते हैं। अगर हम एक ही लक्ष्य पर पहुंच जाते हैं, तो अलग-अलग रास्ते अपनाने में क्या हर्ज है? वास्तव में जितने मनुष्य हैं उतने धर्म हैं।[47] धर्मों की आत्मा एक है, परंतु वह अनेक रूपों में प्रकट हुई है।[48] महात्मा गांधी मानते हैं कि कम या अधिक संसार के सभी बड़े बड़े धर्म सच्चे हैं।[49] सभी धर्म समान और आदरणीय हैं। अहिंसा हमें सिखाती है कि हम दूसरों के धर्मों का वैसा ही आदर करें जैसा हम अपने धर्म का करते हैं।[50]

महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रिका से भारत आने के बाद अपने राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले के सलाह के अनुसार पूरे भारत का भ्रमण किया और भारत की खूबियों और खामियों को जाना समझा। उनके विचारों में वह गहराई दिखती है। गरीबी, असमानता, विशाल आबादी, कृषक समाज की आवश्यकता, उद्योगवाद, बेरोजगारी आदि समस्याओं पर भारत के संबंध में व्यावहारिक विचार रखें जिनका आज भी महत्व बरकरार है। उनको भारतीय धर्म, संस्कृति, मूल्यों और मान्यताओं की गहरी समझ थी। इन्हीं में उन्होंने अपना जीवन निर्देशक सिद्धांत सत्य और अहिंसा को अपना कर उसी के अनुसार भारत को गढ़ने का सपना देखा था। उनके विचार कोरे आदर्शवादी नहीं हैं। व्यवहारिकता पर आधारित हैं इसलिए दुनिया भर में इन विचारों से सीखा जा रहा है। नये भारत में भी उनके विचारों से प्रेरणा प्राप्त किया जा रहा है। महात्मा गांधी के विचारो को अपनाकर ही भारत दुनिया में वसुधैव कुटुबंकम, सर्वधर्म समभाव और शांति के उदान्त आदर्शों का विस्तार किया जा सकता है और भारत इसी से विश्व गुरू की भूमिका को चरितार्थ कर पाएगा। अत: आज के भारत में महात्मा गांधी के विचारो की भूमिका अभूतपूर्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रामचन्द्र, गुहा, 2012, *भारत नेहरू के बाद*, पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, गुड़गांव, पृष्ठ 7
2. अनंत प्रकाश, मोदी सरकार में भारत बनेगा तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, कितनी बदलेगी आम लोगों की जिंदगी, 28 जुलाई 2023, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 7 अगस्त, 2023
3. वही
4. वही
5. वही
6. दुनिया के 10 सबसे अमीर देश कौन हैं और भारत किस पायदान पर है, 17 जनवरी 2023, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 7 अगस्त, 2023
7. जुबैर अहमद, भारत क्या चीन को अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर पीछे छोड़ देगा? विशेषज्ञों का जवाब, 15 अक्टूबर 2022, http://www.bbc.com/hindi देखा गया 10 अगस्त, 2023
8. वही
9. सुरेश सेठ, आर्थिक छलांग की असली सूरत, देश तीसरी आर्थिक षक्ति बनेगा लेकिन क्या होगा आम आदमी पर असर, 7 अगस्त, 2023, http://www.jansatta.com देखा गया 7 अगस्त, 2023
10. कुमार विवेक, गोल्डमैन सैक्स : 2075 तक अर्थव्यवस्था में अमेरिका को भी पीछे छोड़ देगा भारत, जाने कौन होंगे टॉप-3 देश, 11 जुलाई 2023, http://www.amarujala.com देखा गया 7 अगस्त 2023
11. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
12. जुबैर अहमद, पूर्वोक्त
13. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
14. ऑक्सफैम की रिपोर्ट : 1 प्रतिशत अमीरों के पास देश की 40 प्रतिशत से ज्यादा संपत्ति, 50 प्रतिशत आबादी के पास सिर्फ 3 प्रतिशत संपत्ति, 17 जनवरी 2023, http://www.bhaskar.com देखा गया 10 अगस्त 2023
15. सुरेश सेठ, पूर्वोक्त
16. अनंत प्रकाश, पूर्वोक्त
17. गांधीजी, 1955, *सर्वोदय*, भारतन् कुमारप्पा (संपादित), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 49
18. गांधीजी, 1949, *हिन्द स्वराज्य*, अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी (हिन्दी अनुवाद), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ ळीं

19. वही
20. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 48
21. गांधीजी, 1959, *मेरा समाजवाद*, आर.के.प्रभु (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 27
22. वही, पृष्ठ 25
23. ऑक्सफैम की रिपोर्ट, पूर्वोक्त
24. गांधीजी, 1951, *रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और स्थान,* तृतीय परिवर्धित आवृत्ति, काशिनाथ त्रिवेदी (हिन्दी अनुवाद), नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 40
25. वही
26. गांधीजी, *मेरा समाजवाद*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 28
27. *भारत का संविधान,* 2021, विधि और न्याय मंत्रालय, विधायी विभाग, भारत सरकार, पृष्ठ 21
28. गांधीजी, *मेरा समाजवाद*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 24
29. वही, पृष्ठ 27
30. रिजवान नूर खान, भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बना-चीन को पीछे छोड़ा, यूएस तीसरे नंबर पर, 19 अप्रैल 2023, http://www.hindieconomictimes.com देखा गया 10 अगस्त 2023
31. वही
32. आलोक टंडन, जनवरी-जून 2016, *नेहरू और अम्बेडकर : भारतीय आधुनिकता के दो चेहरे,* अभय कुमार दुबे (संपादित), *प्रतिमान : समय समाज संस्कृति*, वर्ष 4, अंक 7, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 18-19
33. शंभुनाथ, अक्टूबर 2019, *गांधी के प्रयोग : सत्य और उत्तर-सत्य,* शंभुनाथ (संपादित), *वागर्थ,* भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका, वर्ष 25, अंक 291, पृष्ठ 7
34. गांधीजी, 1960, *मेरे सपनों का भारत*, आर.के.प्रभु (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 127
35. वही, पृष्ठ 130
36. गांधीजी, 1963, *ग्राम स्वराज्य,* हरिप्रसाद व्यास (संग्राहक), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ
37. सुरेश सेठ, पूर्वोक्त
38. गांधीजी, *हिन्द स्वराज्य*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 15
39. गांधीजी, *मेरे सपनों का भारत*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 108
40. विपुल सिंह, 2015, *पर्यावरण पर मानव पदचिन्ह : पर्यावरण परिवर्तन के ऐतिहासिक संदर्भ,* ट्रिनिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ 146
41. कमल नयन काबरा, जनवरी-जून 2016, *विकास का नया विमर्ष बनाम उपभोक्तावाद,* अभय कुमार दुबे (संपादित), *प्रतिमान : समय समाज संस्कृति*, वर्ष 4, अंक 7, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 153
42. विपूल सिंह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 77
43. गांधीजी, *ग्राम स्वराज्य,* पूर्वोक्त, पृष्ठ 15
44. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 94
45. वही, पृष्ठ 95
46. वही
47. गांधीजी, 1957, *सत्य ही ईश्वर है*, आर.के.प्रभु (संपादित), नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 58
48. वही, पृष्ठ 57
49. वही
50. गांधीजी, *सर्वोदय*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 28

****